सफल व्यवसायी के गुण

सफल व्यवसायी के गुण (Qualities of successful Businessman)

व्यवसाय को आरम्भ करने से पहले इसकी सफलता के लिए कई बातों पर विचार करना आवश्यक है। बाकी सब घटकों के अतिरिक्त एक और अधिक महत्वपूर्ण घटक है - व्यवसायी। व्यवसायी को प्राप्त नेतृत्व के गुण तथा इसकी प्रतिरूप कार्य की क्षमता पर बहुत प्रभाव डालते हैं। व्यवसायी व्यावसायिक नीतियों की योजना तैयार करता है तथा इन नीतियों को कार्यरूप देता है। एक अच्छे प्रबन्ध वाली फर्म की सफलता का कारण व्यवसायी के नेतृत्व के अच्छे गुण होते हैं। कुछ गुण वंशपरम्परा से प्राप्त होते हैं परन्तु कुछ प्रशिक्षण व अनुभव से अर्जित किये जा सकते हैं। एक व्यवसायी में जो योग्यताएं होनी चाहिए, वे निम्नलिखित

i. व्यवसाय का ज्ञान (Knowledge of Business)

व्यवसायी को अपने व्यवसाय के विषय में पूरी जानकारी होनी चाहिए। इसे संगठन के लक्ष्यों तथा उद्देश्यों से पूरी तरह परिचित होना चाहिए इसे विभिन्न कार्य-क्षेत्रों का पूरा ज्ञान होना चाहिए। व्यवसायियों के ज्ञान को व्यापार, वित्त, मण्डीकरण, व व्यापारिक कानून के ज्ञान से परिपूर्ण होना चाहिए। व्यवसाय की जटिल समस्याओं को समझने के लिए इन सभी पहलुओं का ज्ञान ज़रूरी है।

ii. प्रभावशाली व्यक्तित्व (Impressive Personality):—

सुन्दर व्यक्तित्व सदा लाभप्रद होता है। व्यक्तित्व में विभिन्न गुण तथा योग्यताएं सम्मिलित हैं, जो

व्यवसायी को सफल बनाने के लिए जरूरी है। व्यवसायी में दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता चाहिए और वह सभी से सहयोग प्राप्त कर सकता है। उसे ग्राहकों, व्यापार करने वालों से मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखने चाहिए। किसी व्यक्ति की मित्रता भी दूसरों को उसके साथ व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके विपरीत अशिष्ट या क्रोध से बोलने वाले व्यक्ति से सभी किसी भी प्रकार का सम्बन्ध रखने में परहेज करते हैं।

iii. परिश्रमी (Hard-working) :-

व्यवसायी को परिश्रमी होना चाहिए। कठोर परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है। उसे काम के प्रति समर्पित होना चाहिए। उसके इस स्वभाव से दूसरे कर्मचारी भी प्रेरित होंगे तथा उसी उत्साह से काम करेंगे। काम से जी चुराने वाला व्यक्ति दूसरों से भी अधिक काम नहीं ले सकता।

iv. सहयोग प्राप्त करने में समर्थ (Co-operative)

व्यवसायी को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उसे अपनी समस्याओं को हल करने के लिए बहुत से लोगों का सहयोग प्राप्त करना पड़ता है। आज के व्यावसायिक संसार में दूसरों पर निर्भरता से बचा नहीं जा सकता। व्यवसायी को दूसरों के साथ भी सहयोग करना चाहिए। उसमें सहयोग प्राप्त करने की क्षमता भी होनी चाहिए। उसमें सभी प्रकार के व्यक्तियों से बदलने की योग्यता होनी चाहिए। एवं परिस्थितियों के अनुकूल

v. उत्साह (Courage) :-

व्यवसाय में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई बार भिन्न-भिन्न दिशाओं में परस्पर विरोधी मांगें प्रस्तुत की जाती हैं। उपभोक्ता, कर्मचारी व सरकार सभी चाहते हैं कि व्यवसाय उनकी मांगों के प्रति उदार हो उसको विभिन्न हितों में एकरूपता लाना पड़ती है। उत्साह तथा दूरदृष्टि महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सहायता करेगी। उसे कठिनाइयों के समक्ष अपने आपको असहाय नहीं समझना चाहिए। आजकल व्यवसाय कोई आसान काम नहीं है। केवल वही लोग सफल होंगे जिनमें कठिनाइयों के समक्ष मुस्कुराने की क्षमता होगी।

vi. उपक्रम तथा निर्णय लेने की शक्ति (Initiative and Decision Making Power) :-

एक व्यवसायी को प्रतिदिन कई समस्याओं को हल करना पड़ता है। उसे कई कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं। उसमें उचित समय पर निर्णय लेने की योग्यता होनी चाहिए। ~~उसको कठिन निर्णय~~ उसके समूह की शक्तियों को संगठनात्मक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संचालन करना होता है, उसे विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए उपक्रम करना चाहिए और इनके चुनौती समझना चाहिए।

vii. ग्राहकों तथा कर्मचारियों से मधुर सम्बन्ध (Cordial Relations with Employees and Customers) :-

ग्राहकों तथा कर्मचारी व्यवसाय का अभिन्न अंग है। उसे उनकी समस्याओं को चातुर्य से हल

करना चाहिए। ग्राहकों की संतुष्टता व्यवसाय में स्थिरता के लिए आवश्यक है। उसे उनकी पसन्द-नापसन्द को समझने का प्रयत्न करना चाहिए और उन्हें संतुष्ट रखना चाहिए। उसे कर्मचारियों की कठिनाइयों को भी समझना चाहिए। उन्हें अधिक काम करने की प्रेरणा देने के लिए प्रलोभन देना चाहिए। ग्राहकों तथा कर्मचारियों के साथ उत्कृष्ट सम्बन्धों से व्यवसाय का स्थायित्व होगा।

viii. ईमानदारी (Honesty) —

यह उन गुणों में से एक है जो व्यवसायी में अवश्य होना चाहिए। दूसरों से लेन-देन के विषय में उसे ईमानदार होना चाहिए। यदि कोई व्यापारी अपनी वस्तु को झूठे विश्वास दिलाकर बेचता है तो ग्राहक अधिक देर तक उसके धोखे में नहीं रहेंगे। यदि वह ग्राहकों के साथ ईमानदारी का व्यवहार करता है, तो उसकी वस्तुओं की स्थायित बढ़ेगी।

ix. दायित्व को स्वीकार करना (Assumption of responsibility)

व्यवसायी को अपने अधीन कर्मचारियों की विभिन्न क्रियाओं के दायित्व को स्वीकार करना चाहिए। नेतृत्व सम्भालने के कारण वह पूरी प्रभुता एवं जिम्मेदारियों का प्रयोग करता है। उसे जिम्मेदारियों को दूसरे पर थोपने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। परीक्षा की घड़ी में अधीन में अधीन कर्मचारी को यह अनुभव नहीं होना चाहिए कि सहारा नहीं दिया गया। यह गुण कर्मचारियों को आत्मविश्वास देगा और वे स्थिति का अधिक साहस से सामना करेंगे।

x. अनुशासनयुक्त (Disciplinarian) :-

सफल व्यवसायी में अनुशासन के गुण का होना अनिवार्य है। इसमें इसे दूसरों का नेतृत्व करना चाहिए इसे विभिन्न नियमों तथा कानूनों का सख्ती से पालन करना चाहिए। पहले इसे स्वयं अनुशासनयुक्त होना पड़ेगा, केवल तभी वह दूसरों से अनुशासन में होने की आशा कर सकता है। कोई संस्था बिना अनुशासन के नहीं चल सकती।

xi. स्थिति अनुकूल बनना (Adaptability) :-

व्यवसायी को स्थिति के अनुकूल ढलने की योग्यता होनी चाहिए। हो सकता है स्थितियों में जल्दी-जल्दी परिवर्तन आता रहे। उससे आशा की जाती है कि नई चुनौतियों का सामना हौसले से करे। उसे धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए और इन नए वातावरण के अनुकूल परिवर्तन करने में समर्थ हो। व्यवसाय स्थिर परिस्थितियों में नहीं किया जा सकता। व्यवसाय का परिवर्तनशील संसार व्यवसायी से क्रियाशील होने की मांग करती है। इसलिए एक अच्छे व्यवसायी को स्थितियों की आवश्यकता के अनुकूल अपने आपको ढाल लेना चाहिए।